Gyanvividha, Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026 : PP-97-99

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No.- 97-99
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

शिखा श्रीवास्तव
शोधच्छात्रा, प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भय्या)
विश्वविद्यालय, प्रयागराज.

Corresponding Author :

शिखा श्रीवास्तव
शोधच्छात्रा, प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भय्या)
विश्वविद्यालय, प्रयागराज.

अम्बिकादत्तव्यासप्रणीत शिवराजविजय में राष्ट्रवाद

सारांश : आधुनिक संस्कृत साहित्य में राष्ट्रवादी चेतना का सशक्त एवं कलात्मक प्रतिपादन करने वाली कृतियों में अम्बिकादत्त व्यास विरचित शिवराजविजय का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह कृति ऐतिहासिक उपन्यास के रूप में संस्कृत साहित्य को न केवल नवीन विधागत स्वरूप प्रदान करती है, अपितु उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में विकसित भारतीय राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक पुनर्जागरण तथा स्वाधीनता-आकाङ्क्षा को भी सशक्त अभिव्यक्ति देती है। प्रस्तुत शोधपत्र में शिवराजविजय में निहित राष्ट्रवाद के विविध आयामों राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं भावनात्मकता का विश्लेषण किया गया है।

कूट शब्द : राष्ट्रवाद, शिवराजविजय, अम्बिकादत्त व्यास, संस्कृत उपन्यास, राष्ट्रीय चेतना।

अम्बिकादत्त व्यास कृत शिवराजविजय आधुनिक संस्कृत साहित्य की वह महत्त्वपूर्ण कृति है, जिसमें राष्ट्रवादी चेतना का सशक्त, सुसङ्गठित एवं भावात्मक निरूपण प्राप्त होता है। उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध भारतीय इतिहास में राजनीतिक पराधीनता, सांस्कृतिक अपमान तथा राष्ट्रीय अस्मिता के क्षरण का काल था। अङ्ग्रेजी औपनिवेशिक शासन के परिणामस्वरूप भारतीय समाज न केवल राजनीतिक रूप से परतन्त्र हुआ, अपितु उसकी सांस्कृतिक चेतना, धार्मिक परम्पराएँ और ऐतिहासिक गौरव भी संकट में पड़ गए। ऐसे समय में साहित्य ने केवल सौन्दर्य या मनोरञ्जन का माध्यम न बनकर राष्ट्रीय चेतना के संवाहक का दायित्व ग्रहण किया। संस्कृत साहित्य, जो दीर्घकाल तक राजाश्रित और दरबारी सीमाओं में आबद्ध रहा था, इस काल में जनजीवन, राष्ट्रीय पीड़ा और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की अभिव्यक्ति का माध्यम बना। इसी परिवर्तनशील सन्दर्भ में अम्बिकादत्त व्यास की कृति शिवराजविजय का उद्भव हुआ, जो राष्ट्रवाद की दृष्टि से एक केन्द्रीय कृति के रूप में प्रतिष्ठित है।

अम्बिकादत्त व्यास (1858–1900 ई.) आधुनिक संस्कृत साहित्य

के उन विरल साहित्यकारों में से हैं, जिन्होंने अल्पायु में ही विपुल, बहुविध और गुणात्मक साहित्य-सृजन किया। संस्कृत और हिन्दी-दोनों भाषाओं में उनकी समान अधिकारपूर्ण लेखनी उनके व्यापक साहित्यिक व्यक्तित्व को रेखाङ्कित करती है। भारतेन्दु युग की राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और स्वाधीनता-आकाङ्क्षा का प्रभाव उनके कृतित्व पर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। वे राजाश्रय से मुक्त रहकर जनसामान्य के अधिक समीप थे, जिसके परिणामस्वरूप उनकी रचनाओं में लोकभावना, सामाजिक यथार्थ और राष्ट्रीय पीड़ा का प्रामाणिक स्वर उभरकर सामने आता है। शिवराजविजय उनके इसी राष्ट्रोन्मुख साहित्यिक दृष्टिकोण का सर्वोत्तम उदाहरण है।

शिवराजविजय की रचना सन् 1898 ई. में हुई और यह बारह निःश्वासों में निबद्ध वीररसप्रधान गद्यकाव्य है। संस्कृत साहित्य में यह कृति ऐतिहासिक उपन्यास की शैली में रचित प्रथम मौलिक प्रयास है। बङ्गला उपन्यास परम्परा से प्रेरणा लेकर अम्बिकादत्त व्यास ने संस्कृत में कथात्मक प्रवाह, पात्र-विकास, सामाजिक यथार्थ और ऐतिहासिक चेतना का समन्वय प्रस्तुत किया। प्राचीन संस्कृत गद्यकाव्यों की अपेक्षा इसमें अलङ्कारिकता से अधिक भावात्मकता, कथानक की सजीवता और समकालीन सन्दर्भों की स्पष्ट उपस्थिति मिलती है। इस प्रकार शिवराजविजय संस्कृत साहित्य को आधुनिक विधागत दिशा प्रदान करती है।

राष्ट्रवाद के सैद्धान्तिक सन्दर्भ में शिवराजविजय का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि उपन्यासकार का राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक स्वतन्त्रता की आकाङ्क्षा तक सीमित नहीं है। यह राष्ट्रवाद सांस्कृतिक चेतना, ऐतिहासिक स्मृति, धार्मिक परम्परा और सामूहिक आत्मसम्मान का समन्वित रूप है। भारतीय सन्दर्भ में राष्ट्र की अवधारणा धर्म, संस्कृति, भाषा और परम्परा से अविच्छिन्न रही है, और शिवराजविजय इसी समग्र भारतीय दृष्टि को अभिव्यक्त करता है।

कृति में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का स्वर अत्यन्त प्रबल है। कवि भारतवर्ष को मात्र भौगोलिक इकाई न मानकर एक जीवित, पवित्र और सांस्कृतिक सत्ता के रूप में प्रस्तुत करता है। वेद, पुराण, धर्मशास्त्र, मठ, तीर्थ और मन्दिर-ये सभी भारतीय गौरव के प्रतीक हैं। इनके पतन और अपमान का चित्रण कवि गहन वेदना और आक्रोश के साथ करता है। विक्रमादित्य जैसे आदर्श शासकों के गौरवपूर्ण अतीत की स्मृति के माध्यम से वर्तमान पराधीनता और सांस्कृतिक पतन की तुलना की गई है।

"महात्मन् क्वाधुना विक्रमराज्यम् ? वीरविक्रमस्य तु भारतभुवं विरहय्य गतस्य वर्षाणां सप्तदशशतकानि व्यतीतानि। क्वाधुना मन्दिरे मन्दिरे जयजयध्वनिः? क्व सम्प्रति तीर्थे तीर्थे घण्टानादः ? क्वाद्यापि मठे मठे वेदघोषः ? अद्य हि वेदा विच्छिद्य वीथीषु विक्षिप्यन्ते, धर्मशास्त्राण्युद्धय धूमध्वजेषु ध्मायन्ते; पुराणानि पिष्ट्वा पानीयेषु पात्यन्ते, भाष्याणि भ्रंशयित्वा भ्राष्टेषु भर्ज्यन्ते...।" - शिवराजविजयः

यह ऐतिहासिक स्मृति पाठक के हृदय में राष्ट्रीय आत्मग्लानि के साथ-साथ पुनरुत्थान की आकाङ्क्षा भी उत्पन्न करती है। इस प्रकार सांस्कृतिक राष्ट्रवाद शिवराजविजय का आधारस्तम्भ बन जाता है।

राजनीतिक राष्ट्रवाद का स्वर छत्रपति शिवाजी के चरित्र के माध्यम से मुखरित होता है। **"कार्यं वा साधयेयम्, देहं वा पातयेयम्"** शिवाजी को उपन्यासकार ने स्वराज्य, धर्मरक्षा और जनकल्याण के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है। उनका सङ्घर्ष केवल सत्ता-प्राप्ति का सङ्घर्ष नहीं, बल्कि विदेशी अत्याचार, धार्मिक दमन और सांस्कृतिक विनाश के विरुद्ध राष्ट्रीय प्रतिरोध का प्रतीक है। मुगल सम्राट औरङ्गजेब की नीति और युद्ध-कौशल का वर्णन करते हुए उपन्यासकार अन्ततः शिवाजी की नैतिक श्रेष्ठता, रणनीतिक दूरदर्शिता और जनहितकारी शासन को प्रतिष्ठित करता है। यह प्रस्तुति राजनीतिक राष्ट्रवाद को वैचारिक आधार प्रदान करती है।

शिवराजविजय का राष्ट्रवाद केवल शासक वर्ग तक सीमित नहीं है, अपितु उसमें जनसामान्य की पीड़ा, शोषण और आकाङ्क्षाओं का भी यथार्थ चित्रण प्राप्त होता है। विदेशी अत्याचारों से पीड़ित जनता की करुण स्थिति का वर्णन कर पाठक के भीतर करुणा, आक्रोश और राष्ट्रीय उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करता है। यह जनोन्मुख

दृष्टि, कृति को आधुनिक और व्यापक बनाती है।

धार्मिक सहिष्णुता शिवराजविजय के राष्ट्रवाद का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। उपन्यासकार सभी यवन पात्रों के प्रति अन्धविरोध का भाव नहीं अपनाता। जो पात्र भारतीयता-विरोधी नहीं हैं, उनके प्रति सद्भाव और सहिष्णुता का व्यवहार दिखाया गया है। शिवाजी के राज्य में आस्थावान यवनों के सम्मान और सुरक्षा का उल्लेख समन्वयवादी राष्ट्रवाद की अवधारणा को पुष्ट करता है। यह दृष्टिकोण कृति को सङ्कीर्णता से मुक्त कर मानवीय आधार प्रदान करता है।

नारी-तत्त्व भी शिवराजविजय में राष्ट्रभावना की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति बनकर सामने आता है। देवी जगदम्बिका की प्रार्थना के माध्यम से भारतवर्ष की दुर्दशा का मार्मिक चित्रण किया गया है। यहाँ नारी शक्ति राष्ट्र की करुणा, पीड़ा और पुनरुत्थान की आशा का प्रतीक बन जाती है, जो राष्ट्रवादी भावनाओं को प्रगाढ़ करती है।

भाषा और रस की दृष्टि से भी शिवराजविजय राष्ट्रवाद को सुदृढ़ करती है। ओजस्वी, प्रवाहपूर्ण और भावोत्तेजक भाषा वीररस के साथ मिलकर पाठक के मन में उत्साह, गर्व और प्रेरणा का संचार करती है। भाषा, रस और कथानक का यह समन्वय राष्ट्रभावना को बौद्धिक ही नहीं, भावनात्मक स्तर पर भी स्थापित करता है।

यद्यपि शिवराजविजय ऐतिहासिक उपन्यास है, तथापि उसकी वैचारिक प्रेरणा समकालीन भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन से जुड़ी हुई है। इस कृति ने अपने समय में राष्ट्रीय आत्मसम्मान, सांस्कृतिक गौरव और स्वाधीनता-चेतना को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रकार यह केवल साहित्यिक कृति न होकर राष्ट्रीय जागरण का घोषणापत्र भी बन जाती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शिवराजविजय संस्कृत साहित्य का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास होने के साथ-साथ भारतीय राष्ट्रवाद का एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक घोषणापत्र भी है। इस कृति ने अपने समय में राष्ट्रीय चेतना एवं सांस्कृतिक गौरव को उद्दीप्त कर भारतीय जनजागरण एवं स्वाधीनता-आन्दोलन को वैचारिक ऊर्जा प्रदान की। इसमें निहित राष्ट्रवादी चेतना सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक और मानवीय - सभी स्तरों पर विकसित होकर सामने आती है। अम्बिकादत्त व्यास ने इस कृति के माध्यम से भारतीय जनमानस में आत्मसम्मान, स्वाभिमान और राष्ट्रीय गौरव की भावना को सुदृढ़ किया। इसलिए शिवराजविजय न केवल अपने युग की प्रतिनिधि कृति है, अपितु आज भी भारतीय साहित्य और राष्ट्रवादी चिन्तन के सन्दर्भ में पूर्णतः प्रासङ्गिक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची :

1. संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना, हरि नारायण दीक्षित.
2. संस्कृत साहित्य में राष्ट्रवाद और भारतीय राजशास्त्र, डॉ. शशि तिवारी.
3. शिवराजविजयः, व्याख्याकार डॉ. रमाशंकर मिश्र, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी.
4. शिवराजविजयः, व्याख्याकार डॉ. रामानन्द शुक्ल, भवदीय प्रकाशन, अयोध्या.
5. सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, पं. वज्रवल्लभ द्विवेदी, शैवभारतीय-शोधप्रतिष्ठानम्,जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी.
6. राष्ट्रवाद साहित्य और समाज, प्रो. एस. डी. शर्मा, आशा प्रकाशन, कानपुर.

•